Part I Hon.
P. I A

पुलकेशिन II की जीवनी एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डालें

Question - पुलकेशिन II के शासनकाल का वर्णन करें।

पुलकेशिन II की बाल्यावस्था कंटकाकीर्ण, क्योंकि उसका चाचा मंगलेश उसकी हत्या करना चाहता था किन्तु स्वामिभक्त सामंतों ने उसकी रक्षा की। मंगलेश और पुलकेशिन II के बीच गृहयुद्ध के कारण चालुक्य साम्राज्य के विभिन्न भागों ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। ऐहोल अभिलेख में स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया गया है। समस्त संसार पर रूपी अन्धकार छाया हुआ था। पुलकेशिन II के चारों ओर शत्रु ही शत्रु दिखलाई पड़ने लगे। चालुक्य राज्य के बीजापुर क्षेत्र के निकटवर्ती प्रांत्र की अप्पायिक और गोविन्दनामक दो राजाओं के आक्रमण की आशंका थी क्योंकि वे भीमरथी के उत्तरीतट तक बढ़ आये थे पुलकेशिन II के समक्ष बाह्य आक्रमण से रक्षा करने और विद्रोही प्रांतों का दमन करने की दो विकट समस्यायें उत्पन्न हो गयी परन्तु युवा पुलकेशिन ने अपने को स्थिति का सामना करने की शक्ति से सम्पन्न प्रमाणित किया भेदनीति का अवलम्बन करके उसने गोविन्द को अप्पायिक की ओर से विमुख करके अपना मित्र बना लिया। इन विकट परिस्थितियों से निवृत होकर उसने 610-11 ई० में चालुक्यों के शासन का बागडोर अपने हाथ में लिया। उसने 642 ई० तक शासन किया था। D.C. Sarkar ने उसके सम्बन्ध में लिखा है कि Pulkeshin II was undoubtedly the greatest King of the Chalukya house of Badami and one of the greatest monarchs of ancient India

पुलकेशिन II की सैन्य सफलताएँ और विजयें:—

एहोल अभिलेख के प्रशस्तिकार रविकीर्ति ने उसकी विजयों का वर्णन बड़ी काव्यात्मक भाषा में किया है। उसने नागासियों को पराजित करके उनकी राजधानी पर अधिकार जमा लिया। मैसूर के गंग मालाबार के आलूपों और उत्तर के कोंकण के मौर्यों को भी उसके आगे आत्मसमर्पण कर देना पड़ा क्योंकि वे सम्भवतः कदम्बों के मित्र थे और कदम्बों की पराजय के बाद उन्होंने अपना सिर उठाना उचित तथा भव्य न समझा। मौर्यों की राजधानी पुरी पर पुलकेशिन II का अधिकार हो गया। दक्षिण गुजरात के लाटों, मालवों और गुर्जरों का भी उसने दमन किया दक्षिण में उसकी सफलता का प्रमाण अन्य स्रोतों से भी मिलता है। इस प्रकार विभिन्न प्रदेशों से पुलकेशिन II कन्नौज के राजा हर्षवर्धन के सम्पर्क में आया 633 ई० में हर्षवर्धन ने काठियावाड़ पर आक्रमण किया। पुलकेशिन II ने बंगाल के राजा शशांक उसके सामंत कोंगोड के सैन्यापति माधववर्मा II और वलभी तथा भड़ौच के राजाओं को अपने साथ मिला लिया। इस संगठन से 637-38 ई० में उसने हर्षवर्धन को परास्त किया यह ठीक कहा गया है कि भारत के अपरांत क्षेत्र (Division) के वर्तमान गुजरात प्रदेश पर मध्यदेश और दक्षिणापथ के शासकों द्वारा अधिकार करने की चेष्टा से ही उनमें संघर्ष हुआ।

पुलकेशिन II की सबसे महत्वपूर्ण सफलता थी उसके द्वारा उत्तरापथ के सम्राट हर्ष की पराजय। हर्ष ने पुलकेशिन पर आक्रमण किया, परन्तु प्रयत्न विफल ही रहा। पुलकेशिन के सामने हर्ष की एक न चल सकी।

Scanned with CamScanner

और वापस उसे लौटना पड़ा। पुलकेशिन की इस विजय का उल्लेख ऐहोल अभिलेख में इन शब्दों में किया गया है" उसने हर्ष को जिसके चरण कमलों अनेक समृद्ध और अनन्त वैभव सम्पन्न सामन्तों के मुकुटों के मणिमयूख से भासमान रहते थे परन्तु जो युद्ध में गिरती हुई गज पंक्तियों को देखकर भीत हो उठा था इस विजय ने पुलकेशिन की प्रतिष्ठा को बहुत अधिक बढ़ा दिया। अपने अन्य समकालीन राज्यों पर उसका आतंक जम गया। महाकोशल और कलिंग के नृपति उससे भयभीत और आतंकित हो गये। उन्होंने शीघ्र ही उसके सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद बाद समुद्रतटीय पथ द्वारा चालुक्य सेना दक्षिण दिशा की ओर मुड़ी। पिष्ठपुर और एक अन्य दुर्ग पर उसका अधिकार हो गया पिष्ठपुर के राजवंश को विनिष्ट कर दिया गया और उस पर शासन करने के लिए उसने अपने छोटे भाई को शासक नियुक्त किया। तथा इसी शासक विष्णुवर्धन ने पूर्वी चालुक्य वंश की स्थापना की जो 1070 तक विद्यमान रहा। अधिक दक्षिण में पुलकेशिन II ने पल्लवनरेश महेन्द्रवर्मन को युद्ध में पराजित किया और उसे अपने दुर्ग में शरण लेने के लिए बाध्य किया। पल्लव लेखों से सिद्ध होता है कि चालुक्य नरेश पुलकेशिन II पाल्लव राज्य के भीतर तक प्रवेश कर गया था। पुलकेशिन II के आक्रमण ने पल्लवों की राजधानी कांची को खतरे में डाल दिया। इसके बाद कावेरी को पार करके चोलों, केरलों और पाण्ड्यों को अपना मित्र बनाया। अपने शक्तिशाली पड़ोसी पल्लवों के विरुद्ध पुलकेशिन का यह संगठन था। पल्लवों की शक्ति निसंदेह निनष्ट हो गया परन्तु चालुक्य

Scanned with CamScanner

ताकि अपनी विजय पर अधिक समय के लिए गर्व न कर सके और शीघ्र ही पल्लवों की शक्ति का अभ्युत्थान हुआ। पल्लव नरेश नरसिंह वर्मन ने 642 ई० में वातापी पर आक्रमण किया और पुलकेशिन द्वितीय को युद्ध में मार डाला।

पुलकेशिन II के सुविशाल साम्राज्य की सीमाएँ उत्तर में विन्ध्य पर्वत श्रेणी और महानदी तक दक्षिण में मैसूर के पार तक और आसिन्धु सिन्धु पर्यन्त तक फैली थी। इस साम्राज्य के केन्द्रीय भाग पर पुलकेशिन द्वितीय स्वयं शासन करता था और उत्तरी दक्षिणी सीमावर्ती प्रदेशों का शासन सामंतों के सुपुर्द था। भड़ौच, मालव, गंग, कदम्ब पूर्वी गंग और वन इत्यादि प्रांतों के शासक चालुक्य सम्राट के अधीनस्थ सामंत थे। उन्हें अपने, अपने प्रदेशों के आन्तरिक शासन में काफी स्वतन्त्रता प्राप्त थी किन्तु वे पुलकेशिन II की सेवा में वार्षिक कर भेजा करते थे। जिस भाग पर सम्राट का प्रत्यक्ष शासन था वहाँ भी पुश्तैनी सामंत थे, जिन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। इन सामंतों को कुछ प्रदेशों का शासक बना दिया गया था। सम्राट की आज्ञा से शासन करते थे। युद्ध में उसकी सहायता करते थे। सम्पूर्ण साम्राज्य प्रप्रांतों में विभक्त था और प्रत्येक प्रांत के शासन के लिए राजप्रतिनिधि नियुक्त किया जाता था।

ह्वेनसांग का वर्णन— चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 641 ई० में दक्षिण यात्रा की थी। उस समय पुलकेशिन II का दरबार नासिक में था और डाकुओं से भरे घने जंगलों में से रास्ता ढूढने में कानून के पंडित को बहुत कठिनाई हुई। उस प्रदेश को उस समय महाराष्ट्र कहा जाता था। पुलकेशिन II के हितकारी शासन और उसके सामंतों की स्वामी निष्ठा से ह्वेनसांग अत्यन्त प्रभावित हुआ।

Scanned with CamScanner

था। ह्वेनसांग लिखता है कि वह क्षत्रिय जाति का है, उसके विचार विशाल और गंभीर है और अपनी सहानुभूति तथा दान क्रियाओं का उसने काफी विस्तार कर रखा है। उसके प्रजाजन पूर्ण भक्ति के साथ उसकी सेवा करते हैं। यदि कोई सेनानी युद्ध में हार जाय तो उसे शारीरिक दंड न देकर स्त्री वेष पहना देते हैं और इस प्रकार उसे आत्महत्या करने पर विवश कर देते हैं। ह्वेनसांग ने हर्ष और पुलकेशिन II के युद्ध का भी वर्णन किया है।

पुलकेशिन II बादामी के चालुक्य कुल का निश्चय ही सबसे महान राजा था और प्राचीन भारत के सर्वमहान शासकों में भी उसका स्थान है। हैदराबाद अनुदान में उल्लेखित है कि एक सौ युद्धों में संघर्ष करने का संकल्प करने वाले शत्रु राजाओं को परास्त करके पुलकेशिन II ने परमेश्वर उपाधि अर्जित की। इससे उसका प्रभाव और यश भारतीय सीमा का अतिक्रमण कर विदेशों को पहुंच गया और मुस्लिम इतिहासकार तबरी के अनुसार फारस के राजा खुशरू द्वितीय और चालुक्य नरेश के बीच दौत्य सम्बन्ध था। खुशरो II ने 625-26 ई० में पुलकेशिन II द्वारा भेजे गये एक दूतमंडल का स्वागत किया था। कहा गया है कि अजन्ता की एक गुफा के एक चित्र में पुलकेशिन II को उत्तर देते हुए एक ईरानी दूत को प्रस्तुत किया गया है।

Scanned with CamScanner